© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

गोविन्द साहब : प्राचीन आस्था और पर्यटन केन्द्र

बृज बिहारी,
शोध छात्र, भूगोल विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्व0वि0
जमुनीपुर कोटवा इलाहाबाद (उ0प्र0)

शोध आलेख सार – पूर्वांचल का प्रसिद्ध गोविन्द साहब आस्था और पर्यटन के दृष्टिकोण से बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थल है। इस स्थान पर पूरे वर्ष लोग बाबा की समाधि पर खिचड़ी व चादर चढ़ाते है। यहाँ का मेला विशेषकर अगहन माह के शुक्ल पक्ष के दशमी के दिन लगता है, जिसे गोविन्द दशमी के नाम से जाना जाता है। यह मेला पूरे एक माह तक चलता है। यहाँ पर अगहन माह के दशमी के दिन गोविन्द साहब का जन्म हुआ था। करीब चार सौ वर्ष पहले इसी स्थान पर बाबा गोविन्द साहब ने जीवित सामाधि ले लिया था। उसी समय से इस पर्यटन केन्द्र पर दशमी तिथि को प्रत्येक वर्ष भव्य मेले का आयोजन होता है। यहाँ पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु आ कर गोविंद सरोवर में स्नान कर पवित्र गोंविद साहब मठ की परिक्रमा करते हुए श्रद्धालु खिचड़ी चढ़ाते है और अपनी आस्था के मुताबिक मन्नते माँगते है। पूर्वांचल का यह ऐतिहासिक एवं प्रसिद्ध महत्मा गोविन्द साहब स्थल पर्यटन एवं आस्था के दृष्टि से महत्वपूर्ण है। विभिन्न जनपदों से श्रद्धालु आते है और अपनी जरूरत की वस्तुओं को खरीदते है। श्रद्धालु जहाँ खजले, लाल गन्नें की खरीददारी करते है, वही मेले मे लगे चिडियाँ घर, झूला, सर्कस, थियट्र, मौत का कुआँ, काला जादू तथा पर्यटन विभाग द्वारा सांस्कृतिक झांकियों का प्रदर्शन प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। खेती किसानी के यंत्रों के अलावा, हाथी, घोड़े, खच्चर, तथा अन्य मवेशियों की मंडी लगती है। जहाँ पर श्रद्धालु/ पर्यटक इनकी खरीदारी करते है। यह पर्यटन एवं आस्था का केन्द्र स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करती है, जहाँ पर ये लोग अपने सामान बेच कर लाभ अर्जित करते है। मेले को स्वच्छ और सुचारू ठंग से संचालित करने के लिए पर्यटन विभाग, पुलिस प्रशासन तथा अन्य सामुदायिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस पवित्र पर्यटन स्थल पर पहुँचने के लिये सड़क एवं रेलमार्ग की सुविधा उपलब्ध है।

मुख्य शब्द– गोविन्द साहब, आस्था, पर्यटन, मानव।

गोबिन्द साहब : प्राचीन आस्था और पर्यटन केन्द्र

'' मानव बहुत ही कौतुहल प्रिय प्राणी है। और प्रकृति में सबसे बुद्धिमान भी माना जाता है। इसी कौतुहल प्रियता के कारण मानव ने हमेशा खोजी प्रवृति को अपनाया' और निरंतर नये स्थलों की खोज की' उन स्थलों का भ्रमण किया' वहॉ विद्यमान प्राकृतिक सौन्दर्य का रसपान किया, और यात्राओं और भ्रमण का रास्ता बनाया, ये यात्रायें प्रारम्भ में तो नये स्थलों की खोज से प्रारम्भ हुई। उन स्थलों में प्राकृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल प्रमुख रहें। धीरे–धीरे ये यात्रायें पर्यटन यात्राओं बदलती चली गई, जिसने मनुष्य को मानसिक शान्ति और मनोरंजन की अनुभूति करायी, मानव द्वारा पर्यटन की बढ़ती प्रवृत्ति ने ही कालान्तर में पर्यटन के विविध आयामों को जन्म दिया। जिनमें घरेलू पर्यटन, अन्तराष्ट्रीय पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, पारिस्थितकीय

पर्यटन। आज वर्तमान पर्यटन एक उद्योग के रुप में विकसित हो चुका है। जिसने न केवल व्यक्तियों को मनोरंजन और आत्मिक शान्ति की अनुभूति करायी वरन् इसके साथ हो साथ रोजगार और आर्थिक क्रिया को विकसित करने के लिए विश्व स्तर पर प्रयास किये जा रहे है। सभी देश पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु प्रयास में लगे है, वही भारत जो प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण होने के साथ–ही अपने आँचल में एक प्राचीन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक धरोहर को समेटे हुए विश्व के सभी देशों को आकर्षित करता रहा है। भारत में प्राचीन काल से ही यात्रायें और पर्यटन होता रहा है। वर्तमान में सरकार ने इसे एक उद्योग का दर्जा प्रदान कर विभिन्न स्थलों को विकसित कर पर्यटको को लुभाने का प्रयत्न कर रही है।

भारत में उत्तर प्रदेश प्राचीन काल से ही प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ अपने ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों के लिऐ विश्व विख्यात हैं। उत्तर प्रदेश में (कोशल महाजनपद) अवध क्षेत्र जिसकी राजधानी अयोध्या जहाँ हिन्दू पुराण के अनुसार रामायण महाकाव्य के ईश्वर स्वरुप राजा राम ने शासन किया था।

अवध क्षेत्र में अनेकोनेक पुरातात्विक धार्मिक स्थल विद्यमान है। जिनमें गोबिन्द साहब जो वर्तमान अम्बेडकर नगर जिले में स्थित है। एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल के रुप में लाखों पर्यटकों को आस्था और मनःशान्ति की अनुभूति कराता है।

यह प्राचीन आस्था का केन्द्र एवं पर्यटन स्थल ''गोविन्द साहब'' का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल अम्बेडकरनगर और आजमगढ की सीमा पर स्थित है, जो प्राचीन काल से हिन्दुओं के आस्था का प्रमुख केन्द्र रहा है। यहाँ प्रत्येक वर्ष एक माह का मेला लगता है, जिसमे स्थानीय पर्यटको के साथ–साथ देश के अन्य भागों से पर्यटक आते है। पर्यटक यहाँ पर आ कर प्रसिद्ध गोविन्द साहब बाबा की मजार पर चादर और खिचड़ी चढ़ाते है। लोगों की मान्यता है कि गोबिन्द साहब बाबा को गोविन्द दशमी के दिन खिचड़ी चढाने से लागों की मनोकामनाए पूरी हो जाती हैं बाबा का जन्म अम्बेडकर नगर जिले जलालपुर थाना क्षेत्र के नगपुर गाँव में हुआ था, इनके पिता का नाम 'पृथुघर द्विवेदी' तथा माता का नाम 'दुलारी देवी' था। बाबा के बचपन का नाम गोविन्दधर द्विवेदी था। बाबा साहब के माता– पिता धार्मिक विचारों से काफी प्रभावित थे। जिसका प्रभाव बाबा पर पड़ा। बाबा बचपन से ही शास्त्र ज्ञान में प्रवीण व श्रीमद भगवत गीता के प्रवचन में निपुण थे। बाबा साहब के गुरू 'भीखा साहब' थे। जिन्होने बाबा साहब को वचन दिया कि आप चारो धाम की यात्रा करके आये, तब मैं भगवान का दर्शन कराउँगा। इसके पश्चात बाबा साहब ने चारधाम की यात्रा की। जब बाबा साहब गुरू से दीक्षा लेकर घर लौटने लगे तो गुरू ने बाबा साहब को बताया था कि जहाँ पर तुम रात्रि विश्राम करोगे, वही तुम्हारी तपोस्थली बन जायेगी। बाबा सांय काल बूढ़ी गंगा नदी के किनारे 400 विद्यवा के पास रूके और वही पर उन्होनें तपस्या की। इसी स्थान पर बाबा साहब ने संवत 1726 में अगहन माह के शुक्ल पक्ष के दिन समाधि ले ली इसलिए प्रत्येक वर्ष अगहन माह में एक माह के मेले का आयोजन होता है। लोगो की ऐसी मान्यता है कि एक बार एक व्यापारी बूढी गंगा नही में नाव से यात्रा कर रहा था, अचानक उसकी नाव डूबने लगी उसने बाबा का स्मरण किया और उसकी जान बच गई।

व्यापारी ने प्रसन्न होकर इस तापोभूमि पर एक विशाल मंदिर का निर्माण फरवाया और तालाब की मरम्मत भी करवायी।

यह धार्मिक एवं पर्यटन केन्द्र भारत की प्राचीन संस्कृति और सौहार्द्र का परिचायक है जहाँ प्राचीन ग्रामीण संस्कृति तथा आधुनिक संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। दूर–दूर से आये श्रद्धालु मंदिर के पास स्थित पवित्र सरोवर में स्नान कर बाबा के मठ की परिक्रमा करते है तथा चादर, खिचड़ी ब गन्ना चढ़ाते है। सरोवर में स्नान समरसता और एकता का प्रतीक माना जाता है। ताने–बाने से बुनी चादर सदभाव का सूचक है जो एकता का प्रतीक है। जो बाबा के अत्यधिक प्रिय थी। खिचड़ी को आंतरिक प्रेम और शुद्धता का प्रतीक माना जाता है, जबकि गन्ना मधुरता का पावन सूचक है। यह धार्मिक पर्यटन के साथ–साथ मनोरंजन का भी प्रमुख केन्द्र है। जहाँ पर दूर–दूर से दर्शन के लिए आये पर्यटक तालाब में मछलियों को देखते है तथा उन्हे चारा खिलाकर मनोरंजन करते है। यह स्थान आस्था के साथ–साथ पर्यटन में भी अपनी महत्तवपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ एक माह के मेले के आयोजन के कारण देश–विशेष व दूर–दराज से आये लोग बाबा के समाधि का दर्शन कर, मेले में अपनी आवश्यकता की विभिन्न वस्तुओं को खरीदते है, जिसमें खेती के सामान के अलावा हाथी, घोड़े, खच्चर व लकड़ी के समान की भी मंडी लगती है।

इसके साथ ही साथ यहाँ की प्रसिद्ध मिठाई खोवे वाले खजले जो अपने स्वाद के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ स्थानीय किसानों के द्वारा काले गन्ने की बहुत बडी मंडी भी लगाई जाती है। मेले में पर्यटको के मनोरंजन के लिये थियटर, संगीत, कालाजादू, सर्कस, सिनेमा प्रमुख है, जो पूरे माह मनोरंजन प्रदान करते हे। मेले में पर्यटन विभाग के द्वारा मनमोहक झाँकियों का प्रदर्शन किया जाता हैं जो पर्यटको को प्राचीन भारतीय ग्रामीण संस्कृति का दर्शन कराती हैं। बाबा गोबिन्द साहब को उनके समाज सेवा के कारण भी जाता जाता है। उन्होने अपनी तपोस्थली में एक बड़े सरोवर का निर्माण उस समय करवाया जब उस क्षेत्र मे जलस्रोत की बहुत कमी थी। आज उसी सरोवर में लोग आस्था की डुबकी लगाकर आत्मा की शान्ति की अनुभूति करते है। कहा जाता है कि सन्त गोविन्द साहब का जन्म मानवता को सत्य का सन्देश देने के लिए हुआ था। इन्होंने मानव समाज को अज्ञानता के मार्ग से हटाकर ज्ञानमार्ग का दर्शन कराया। जिसकी झलक यहाँ आये पर्यटकों के अन्दर देखने को मिलती है। यहाँ विभिन्न समुदायों के लोग आकर परस्पर आनन्द और मनोरंजन की अनुभूमि करते है।

लाखों श्रद्धालुओं को आस्था और विश्वास को देखते हुए पूर्व कैबिनेट मंत्री स्व0 श्री रामलखन वर्मा के प्रयास से उत्तर प्रदेश सरकार ने डेढ़ दशक पूर्व इस तपोस्थली को पर्यटन स्थल घोषित कर सौन्दर्यीकरण कराया था।

मेले मे स्वच्छाता व सुचारू ढंग से संचालन के लिए पर्यटन विभाग, पुलिस प्रशासन तथा अन्य सामुदायिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। इस पवित्र पर्यटन स्थल पर पहुँचने के लिये पर्यटकों को सड़क तथा रेल मार्ग की सुविधा उपलब्ध हैं। यह पर्यटन स्थल अम्बेडकर नगर जिला के मुख्यालय अकबरपुर से मुख्य मार्ग द्वारा जुडा है। जो अकबरपुर–आजमगढ़ मुख्य मार्ग पर स्थित आलापुर तहसील के न्योरी बाजार से 8 किलो मीटर सड़क मार्ग से जुडा हुआ है। जिला मुख्यालय अकबरपुर से इस स्थल की दूरी 52 किलोमीटर वा आजमगढ़

जिला मुख्यालय से 48 किलोमीटर दूर है। यह पर्यटन स्थल विश्व प्रसिद्ध (रामजन्म भूमि) आयोध्या से मुख्यमार्ग तथा रेलमार्ग द्वारा जुडा है। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा इस ऐतिहासिक स्थान के पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए प्रमुख मार्गो का निर्माण कराया जा रहा है। यहाँ पहुँचने के लिये उत्तर प्रदेश परिवहन निगम की सेवा व निजी वाहनो द्वारा आसानी से पहुँचा जा सकता है। उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र के प्रमुख ऐतिहासिक पर्यटक स्थलो में बाबा गोविन्द साहब का स्थान प्रमुख है। जहाँ पर्यटक आस्था की डुबकी लगा कर आत्मिक शान्ति की अनुभूति करते हैं।

References

1. Sharma, Ajay (2015) पर्यटन के विविध आयाम : उ0प्र0 एक अध्ययन, न्यू रॉयल बुक कं0–लखनऊ
2. श्रीवास्तव के सी0 (2007), प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, युनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद
3. सूचना न्यूज– टाण्डा अम्बेडकरनगर– 8 दिसम्बर 2016
4. फिल्म बन्धु – उ0प्र0
5. स्थानीय पत्र एवं पत्रिकायें,
6. रेनबोन्यूज – नवम्बर–27,2017
7. राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र